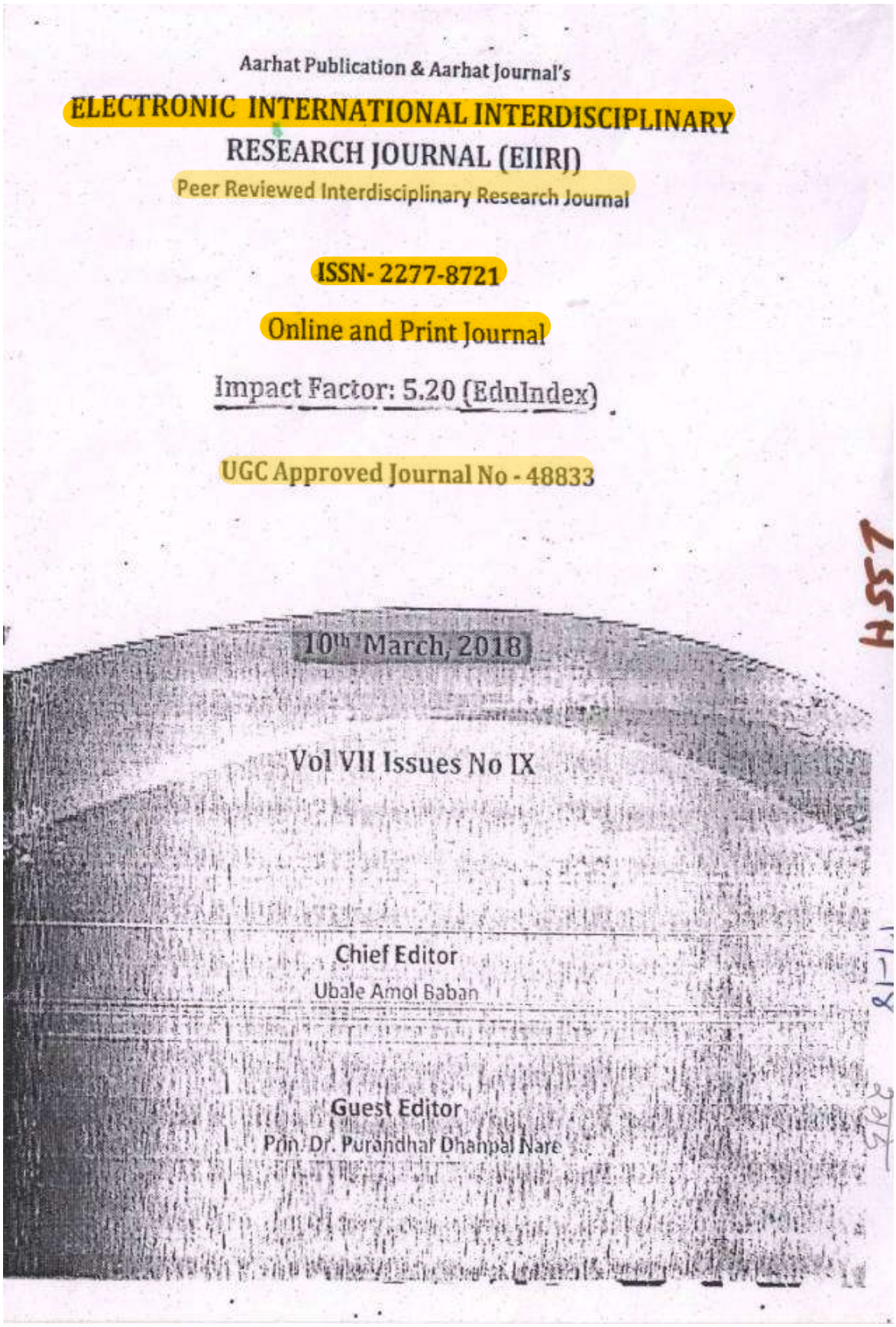

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No IX

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Guest Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No IX

प्रा. पी. आर. रमडे
(हिंदी विभाग प्रमुख)
शंकरराव जगताप आर्ट्स [illegible]
कॉलेज, वाघोली, ता कोरेगाव, जि सातारा

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Guest Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No IX

प्रा. पी. आर. रुमडे
(हिंदी विभाग प्रमुख)
शंकरराव जगताप आर्ट्स [illegible]
कॉलेज, वाघोली, ता कोरेगाव, जि सातारा

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Guest Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

18	शिक्षण आणि भारतीय स्त्रिया : वर्तमानकालीन स्थिती एक दृष्टीक्षेप	एस.एस.खेडेकर	77
19	हिंदी और मराठी नाटकों में प्रतिबिंबित आंबेडकरवादी चेतना	डॉ भानुदास आगेडकर	81
20	नागार्जुन के काव्य की जनवादी चेतना	डॉ भास्कर भवर	88
21	हिन्दी की दलित लेखिकाएँ : इतिहास की रेखाओं में	डॉ. साईनाथ विठ्ठल चपले	91
22	कहानीकार कमलेश्वर : एक मूल्यांकन	डॉ मोहन सावंत	98
23	नाटककार : जगदीशचंद्र माथुर	प्रा.राठोड पी.आर	103
24	भूमंडलीकरण और हिंदी भाषा	प्रा. शिवाजी पवार	109
25	हिंदी साहित्य में संत कबीर की प्रासंगिकता	विकास विधाते	112
26	हिंदी भाषा और साहित्य के संदर्भ में	संजय पाटिल	116
27	कोल्हापूर संस्थानातील छत्रपती शाहू कालखंडातील मल्लविद्या व कुस्ती खेळाचा अभ्यास (सन १८९४ -१९२२) - एक ऐतिहासिक अभ्यास	प्रा.वाय.ए. आवळे	122
28	प्रबळ विरोधी पक्षाची गरज	प्रवीण पोवार	125
29	१८ ते २० वयोगटातील कबड्डी खेळाडूच्या शारीरिक क्षमतेच्या घटकांचा अभ्यास	विशाल पाटील	128
30	इचलकरंजी संस्थानच्या शैक्षणिक विकासामध्ये श्रीमंत ना.बा.घोरपडे यांचे योगदान	डॉ. सपकाळ रामेश्वर	131
31	सामाजिक वंचितता व समावेशन या संकल्पनांचा भारतीय संदर्भातील अभ्यास	डॉ. किशोर खिलारे	135
32	ग्रंथालयातील वाचन साहित्याचे नवे स्रोत ई स्रोत (प्रकाशने)	नलवडे सुनंदा	139
33	भारतीय खेळाचा इतिहास व विकास	यमगेकर व्ही.एस	146
34	"फाईल ट्रिटीयल राईटची माहिती व फायदे "	रतन नाईकनवरे	150
35	वर्तमान शिक्षा प्रणाली : दशा और दिशा	डॉ.खंदारे चंदू	154
36	डॉ परशुराम शुक्ल के सृजनात्मक बाल साहित्य का मूल्यांकन	डॉ. एस.आर.मुडकर	156

नाटककार : जगदीशचंद्र माथुर

प्रा. रगडे पी. आर.

(हिंदीविभागप्रमुख) किसान जगताप आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज वाघोली, ता.कोरेगाव, जि.सातारा
संलग्न, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर (महा.)

'नाटक' हिंदी साहित्य की अन्य गद्य विधाएँ जैसे उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण की तुलना में अधिक श्रेष्ठ एवं अत्यंत प्रभावात्मक विधा है। प्राचीन संस्कृत आचार्य भरतमुनि का कथन ''काव्येषु नाटकं रम्यं'' नाटक की उसी श्रेष्ठतमता का प्रमाण प्रतिपादित करता है। आधुनिककालिन साहित्यिक विद्वान भी नाटक विधा को समकालीन परिवेश का दस्तावेज मानते है। उनके अनुसार समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति नाटक में अधिक वास्तविक तथा अत्यंत सजीवता से नाटककार द्वारा प्रस्तुत की जाती है। एक तरह से नाटक विधा में ही सम–सामायिक स्थितियों का एव सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का वास्तविक दर्शन अत्यंत प्रामाणिकता से हुआ दिखाई देता है। यही कारण है कि हिंदी नाटक विधा को युगीन परिवेश का दस्तावेज कहा जाता है। यद्यपि हिंदी नाटक विधा का आरंभ और उसका विकास प्राचिन भारतीय नाट्यशास्त्र के ही ढंग पर ही हुआ है; ऐसा माना जाता है, किंतु स्वतंत्रता के प्रथम दशक के अंत तक आते–आते हिंदी नाट्य क्षेत्र में कार्यरत अधिकतर नाटककार यह अनुभव कर चूके थे, कि नाट?य लेखन समकालीन सामाजिक विसंगतीयाँ, राजनीतिक समस्याओं, सांप्रदायिक संघर्षताओं के प्रतिक्रिया स्वरूप साकार करना है। उनकी यही प्रासंगीकता हिंदी नाटक को आधुनिकता की ओर उन्मुख करती है। एक तरह से इन नाटककारों ने अपने विचार तथा अपने श्रेष्ठतम् नाट्य रचनाओं के माध्यम से संपूर्ण युग को प्रभावित किया था। अपने युग को प्रभावित करनेवाले अनेक हिंदी नाटककारों में से एक है – जगदीशचंद्र माथुर।

जगदीशचंद्र माथुर : सामान्य परिचय

''जिस वातावरण में वे बाल्यकाल में पले, उसकी स्मृतियाँ रह–रहकर उनके अंतःकरण में ग्रामीण जीवन के विकास के लिए कुछ–न–कुछ करने को प्रेरित करती रहती है। सरकारी और गैर सरकारी कार्य करते हुए उनके हृदय में ग्रामीण भाईयों के लिए कुछ कर जाने की लालसा एवं प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को सामने रखने की आकांक्षा उछाले लेती रहती है। इसी कारण नालंदा, वैशाली और राजगृह जैसे छोटे–छोटे गाँवों में इन्होंने भगवान बुध्द और महावीर को साक्षात दर्शन कराने के लिए बडे उद्योग किए। वहाँ शोधपीठ की स्थापना कराई। उनके मृतक अतीत वैभव को जीता जागता खडा करके दिखा दिया। ग्रामीणों की आँखे विस्मय–विस्फारित होकर इस सरकारी अफसर को देखती रहीं कि इसने कीचड में कैसे रंग–बिरंगे कमल खिला दिए।''[1] प्रसिध्द हिंदी नाट्य समिक्षक एवं नाट्य–अभ्यासक दशरथ ओझाजी का यह मंतव्य जगदीशचंद्र माथुरजी के सर्वांगीन व्यक्तित्व तथा उनकी कियाशीलता का भलिभाँति परिचय देता है। सरकारी अफसर रहे माथुर जी के व्यक्तित्व पर जिंदगी